Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

आप्रवासी भारतीयों के देश त्रिनिदाद एंड टोबेगो में भारतीय संगीत का बदलता स्वरुप

Dr. Rajesh Gopalrao Kelkar[1], Dr. Kedar Mukadam[2]

1 Dept. of Vocal, Faculty of Performing Arts, The Maharaja Siajirao University of Baroda, Barodra
2 Assistant Professor Faculty of Performing Arts, The Maharaja Siajirao University of Baroda, Barodra

शोध सार

यह सर्वविदित है की, 'संगीत' यह भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। अपने परिश्रम, संस्कार, ज्ञान–विज्ञान, व्यापार, कला के माध्यम से सारे विश्व में सदियों से आप्रवासी बनकर वहां भारतीय संस्कृति का झंडा गाड़ने का पवित्र कार्य भारतीय मूल के लोगों ने किया। दक्षिण और मध्य अमेरिका क्षेत्र में (करिबियन देशों में) सूरीनाम, गयाना और त्रिनिदाद यह प्रमुख देश है जहाँ पर भारतीय मूल के लोगों की तादाद अत्यधिक मात्रा में है। देश के अन्य नागरिकों की तुलना में (आफ्रीकी, दक्षिण अमरीकी मूल के और अन्य लोग) उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति बहुत बेहतर है। इसी कारण कला, संस्कृति और परम्पराओं का जतन और संवर्धन होना स्वाभाविक है। भारत से स्थानांतरित होने के बाद भी दशकों (डेढ़ शतक से भी अधिक) तक अपने संगीत को न केवल सम्हाला अपितु उसे संवारा, सजाया और अधिकाधिक समृद्ध किया। वर्त्तमान समय में त्रिनिदाद एंड टोबेगो एक संपन्न लोकशाही देश है जहाँ भारतीयों की कला, संस्कृति, शिक्षा, अध्यात्म, राजनीति और व्यापार इत्यादि क्षेत्र में भी बोलबाला है। फलतः उन्होंने जतन की हुई सांगीतिक शैलियों की विकास यात्रा के विषय में जानना बेहद रोचक होगा। समय के चलते टेक्नोलोजी में विकास और वैश्वीकरण के युग में भारत के साथ इन देशों के सम्बन्ध पुनर्स्थापित हुए। फलतः संगीत के विभिन्न प्रकार उनके अन्यान्य आयाम विकसित हुए। त्रिनिदाद एंड टोबेगो दक्षिण एवं मध्य अमेरिका के सभी देशों की तुलना में आर्थिक दृष्टी से प्रगत देश है। स्वयं संशोधक का इस देश में अन्यान्य कारणों से और विशेषतः संगीत विद्या के प्रचार और प्रसार के सन्दर्भ में त्रिनिदाद एंड टोबेगो में कई बार जाना हुआ। वहां के भारतीय समाज के रस्मो रिवाज, कला संस्कृति का निकट से अवलोकन करने का लाभ मिला। इस लेखन में संक्षेप में मूल त्रिनिदाद में जन्मी दो भारतीय शैलियाँ (चटनी और पिचकारी) तथा कुल मिलाकर भारतीयों के संगीत शैलियों में आये हुवे परिवर्तन का जायजा लिया गया है।

बीज शब्दः आप्रवासी, भारतीय, संगीत, त्रिनिदाद एंड टोबेगो, बदलाव।

भूमिका

त्रिनिदाद एंड टोबेगो–आप्रवासी भारतीय लोगों की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

सन १८३० में त्रिनिदाद देश में गुलामी प्रथा का अंत आया। इसके बाद खेतों में काम करने के लिए कामदारों की आवश्यकता थी। स्वाभाविकतः मनुष्यबल की दृष्टि से समृद्ध भारत की और नजर जाना स्वाभाविक था। मूल उत्तर भारत के भोजपुर, अवध प्रदेश से (पश्चिमी बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश) सन १८४५ से १९१७ तक करीब ४१७,००० श्रमिक वर्ग के लोगों को जहाज़ों में भरकर त्रिनिदाद टोबेगो (मध्य अमरीका), ब्रिटिश गयाना और सूरीनाम (दक्षिण अमरीका) भेजे गए। उनमें से कुछ मात्रा में श्रमिकों को अन्य द्वीपों में भेजा गया। सस्ती मजदूरी के कारण लाये गए यह लोग अधितकर पीड़ित, गरीब एवं शोषित श्रमिक किसान वर्ग के से थे। उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत गन्ने के खेतों में मजदूरी करने के लिए लाया गया था। इनमें से काफी मात्रा में लोग थोड़ी बहुत कमाई कर के पश्चात् भारत वापस लौटे और बाकी काफी संख्या में वहीं पर बस गए। इन्हें गिरमिटिया

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

मजदूर (Indentured labours) कहा जाता है। उन्हीं के वंशज अब इन तीनों देशों में कुल मिलाकर १४ लाख की संख्या में है। उनमें से त्रिनिदाद टोबेगो में अंदाजन ६ लाख लोग रहते है। इन आप्रवासी भारतीयों को इंडो–त्रिनिदादियन कहते है।

पृथ्वी के पश्चिमी गोलार्ध में विषुववृत्तीय प्रदेश में भारत से करीब १४,००० किलोमीटर दूर त्रिनिदाद एंड टोबेगो ट्रोपिकल वातावरण और प्रकृति सौन्दर्य से परिपूर्ण हरा भरा छोटा सा एक देश है। उसके साथ टोबेगो के अलावा और अन्य कइ द्वीप को मिला कर यह देश बनता है। केवल ५,१२८ वर्ग मीटर क्षेत्रफल और समग्र देश की आबादी बहुत ही कम (१३.६ लाख –१९१६ के सेन्सस अनुसार) होने के साथ साथ प्राकृतिक संपत्ति की कोई कमी नहीं है। परन्तु राजनीति, व्यवस्था का अभाव इत्यादि के चलते यह देश चाहे आर्थिक दृष्टि से विकसीत नहीं परन्तु विकासशील अवश्य है।

सांगीतिक विरासत

भारत से गरीब शोषित श्रमिकों एवं किसानों की यात्रा अधिकतर जहाज़ों के माध्यम से कोलकाता पोर्ट से शुरू हुई। इन में अधिकतर अशिक्षित थे और बहुत ही कम मात्रा में लोग प्राथमिक स्तर पर शिक्षित थे। कुछ संख्या में ब्राह्मण वर्ग भी था जो अपने आप को धर्म और संस्कृति के जानकार मानते थे। त्रिनिदाद में जाने के बाद इन लोगो ने अपने क्षेत्र की ग्रामीण लोकसंस्कृति को अपने ह्रदय से संजोये रखने का काम किया, जो कि उनकी ऊर्जा का सर्वाधिक प्रबल स्रोत था। संगीत में अपने क्षेत्र की लोक धुनें, धार्मिक भक्ति संगीत, तुलसी रामायण, गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ तथा जन्म–मृत्यु, विवाह, काम–मजदूरी करते समय गाये जाने गीत वगैरह की पूँजी उनके पास थी। मंजीरा, करताल, ढोलक, टूटे फूटे हारमोनियम जैसे वाद्य उनकी संपत्ति थी। उसका उन्हें कोई शास्त्रशुद्ध ज्ञान नहीं था और न ही शिक्षा की व्यवस्था होने का प्रश्न था। इन श्रमिक और किसान वर्ग के पास कोई विशिष्ट परम्परा का भी ज्ञान नहीं था। केवल श्रुति और स्मृति से प्राप्त संगीत के वाद्य, गीतों की धुन इत्यादि की जानकारी उनके पास थी। बचपन से संस्कारों द्वारा स्मृतिबद्ध हुए पदों एवं उनकी संगीत धुनों को अपने विचार और कल्पनाओं को परिभाषित करते हुए अपने संगीत के खजाने को उन्होंने समृद्ध किया। उसी के आधार पर उनकी संगीत यात्रा शुरू हुई। जब भारतीय मूल के लोग त्रिनिदाद में आये तो वर्षों तक गन्ने के खेतों में रहे। वहां कुछ वर्षों तक मेहनत मजदूरी करने के बाद की हुई कमाई को ले कर परिवारों के समूह ने गावों की रचना की। वहीं स्वयं अपने खेत उन्होंने बसाए, मंदिर बनाए। इनकी बस्ती अफ्रीका से आये त्रिनिदादी लोगों से अलग होने के कारण इन्हें अपनी संस्कृति और विरासत को संभाल के रखने और आगे बढाने का अवसर उनकी इच्छा के अनुरूप मिला। आज भी अधिकतर भारतीय गावों में और अफ़्रीकी मूल के लोग अधिकतर शहरों में बसे है। हालाकि समय चलते स्थिति में बदलाव अवश्य आया है और भारतीयों ने धार्मिक और शैक्षिक संस्थाएं, उद्योग, तकनिकी, कला संस्था तथा राजनीति के माध्यम से अपना डंका इस देश में बजाया है।

बदलाव की शुरुआतः सन १९१७ तक भारतीय मूल के लोग गिरमिटिया मजदूर के रूप में आते रहे। उसके बाद जो बचे थे उन सभी ने त्रिनिदाद को अपना स्थायी देश स्वीकार लिया था। अब धीरे धीरे भारतीय समाज का आत्मविश्वास, सामजिक स्थिति में स्थिरता आना शुरू हुई। दूसरी तरफ भारत से लोगो का आना बंद होने के कारण एक तरह से भारत से संपर्क टूट गया। अब जो अपने पास है उसी में से निर्मिती करनी है या जो है उसे दोहराना यही दो विकल्प बचे थे। उतने में १९३० से ७८ आरपीएम् की रेकार्ड्स और छुट–पुट हिंदी फिल्मों का

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

आगमन होने लगा। इसके प्रभाव से कहीं न कहीं अनजाने में उनके संगीत पर प्रभाव पड़ने लगा और बदलाव भी आने लगा। परंतु कईं धुनें तो ऐसी रही की चाहे गयाना, सूरीनाम और फिजी जैसे देश भी क्यूँ न हो उनमें कोई अंतर नहीं था। तो दूसरी तरफ समय के चलते यही धुनें भारत में नष्ट हो चुकी थी। साथ साथ कुछ सुरावलियों में शौकिया संगीतकारों ने अपनी कल्पना के अनुसार परिवर्तन भी किये और कुछ इस प्रकार के नए गीत अस्तित्व में आये की जिसमें आफ्रिकन, करिबियन संगीत का प्रभाव होने लगा और विशेषतः वाद्यों का मिश्रण होने के कारण कुछ नयी संगीत रचनाएँ अस्तित्व में आयी। हालांकि एक तरफ मूल भोजपुरी और अवधि मिश्रित भाषा कमजोर होने लगी तो दूसरी तरफ सनातन धर्म महासभा, आर्य समाज, चिन्मय मिशन इत्यादि धार्मिक संस्थाओं की स्कूल और प्रवचनों के माध्यम से हिन्दू पंडितों और शिक्षको के माध्यम से समाज पर भोजपुरी मिश्रित आधुनिक हिंदी का प्रभाव होने लगा। भारत के साथ आधुनिक युग में गत ७०–८० वर्षों में आवा जाही बढ़ने के कारण हिंदी फ़िल्मी गीत, ग़ज़ल, भजन और यहाँ तक की विशुद्ध शास्त्रीय संगीत भी आम जनता तक पहुचने लगा। एक तरह से कला–सांस्कृतिक जगत में पुनः प्रवर्तन होने लगा।

विभिन्न शैलियाँ और स्वरुपः यहाँ एक उल्लेख करना आवश्यक है। मूल भारत से आये लोगों द्वारा जो विभिन्न शैलियाँ प्रचार में थी और अब भी है, उनमें कुछ लोकसंगीत के प्रकार जैसे की सोहर (बालक के जन्म के अवसर पर), विवाहादि में 'गाली' (कन्या पक्ष की और से वर पक्ष की तरफ कटाक्ष), मृत्यु के अवसर पर 'निर्गुण' (शोक गीत), फगवा–होली के गीत, चौताल, तान सिंगिंग (वहां का पारम्पारिक शास्त्रीय संगीत), तासा ड्रम, उलारा, गाली, मटकोर आदि गीत–संगीत प्रकार गाये बजाये जाते है। त्रिनिदाद के भारतीय लोगो के पास उत्तर भारतीय ठुमरी, तिल्लाना या तराना, ग़ज़ल, ध्रुपद, टप्पा, तिरवट नाम से कुछ गीत प्रकार थे। पर वास्तव में भारत में शास्त्रीय संगीत के इन प्रकारों से कोई भी समानता नहीं। हाँ, कुछ साहित्य, लय, स्वरावालियों में थोडी बहुत समानता है। पदों के साहित्य को इधर उधर जोड़कर मानो कोई नया रूप दिया गया हो ऐसा प्रतीत होता है। परन्तु कुल मिलाकर धुनों को उलट–पलट कर के एक ही चौखट में सब कुछ निश्चित क्रम में गाया जाता है। उदाहरणार्थ ध्रुपद गायकी के अनुरूप शब्दयुक्त 'नाद बिकट बेद' होते हुए भी उन्हें अन्य गीत प्रकार जैसे 'तान सिंगिंग' या 'क्लासिकल सिंगिंग' की तर्ज पर ही गाया जाया है। आश्चर्य की यह बात है की ध्रुपद हो या तराना, ठुमरी हो या भजन, संगति के लिए दंडताल (धनताल), ढोलक, मंजीरा, करताल, हारमोनियम बजाया जाता रहा। आज कल इसके साथ की बोर्ड, गिटार, मेंडोलिन तथा अन्य इलेक्ट्रोनिक वाद्य भी लिए जाते है। इसको सही या गलत कहना अर्थहीन होगा। क्योंकि यह अपने आप में नवसृजन है। उसके पीछे उनका अपना विचार, सोच और सौन्दर्य है, जिसे निभाते हुए यह कलाकार गलत उच्चारणों के बावजूद खूब मन लगाकर गाते है।

करीबियन देशों में (विशेषतः त्रिनिदाद में) भाषा का मुद्दा छोडकर उसके अलावा प्रवासी भारतीय और उनके कला संस्कृति इत्यादि पर सामाजिक, राजकीय, आर्थिक और वैश्वीकरण युग के सांस्कृतिक वातवरण का प्रभाव पड़ा है। गयाना, सूरीनाम और जमैका की तुलना में त्रिनिदाद में भारतीय मूल के लोगों के लिए काफी अनुकूल स्थिति रही है। क्यों की १९७० से वहां राजकीय स्थिरता यह प्रमुख कारण है। सक्रीय और रंगीन मिजाज के क्रियोली संगीत और संस्कृति (आफ्रिका से सम्बंधित), केलिप्सो, कार्निवल और स्टील बैंड स्पर्धाओं के कारण आर्थिक दृष्टि से समृद्ध इस देश में भारतीय कला और संस्कृति में भी स्पर्धात्मक वातावरण निर्माण हुआ। उसके चलते ही पारम्पारिक लोकगीत और तथाकथित क्लासिकल संगीत के अलावा नवनिर्मित पिचकारी, और विशेषतः चटनी

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

म्युज़िक की लोकप्रियता में असाधारण वृद्धि हुई है। यूँ कहें तो गलत न होगा कि हिंदी फिल्म संगीत के बाद चटनी म्युज़िक सब से अधिक लोकप्रिय है। उसकी लोकप्रियता ने युरोप, उत्तर तथा दक्षिण अमरीका, कनाडा और करिबियन द्वीपों में अपना डंका बजाया है।

चटनी और पिचकारी संगीत शैलियाँः वैसे अनेक शैलियों के विषय में लिखा जा सकता है, परंतु चटनी और पिचकारी संगीत यह पूर्णतः नए संगीत प्रकार है जो पिछले कुछ दशकों में अस्तित्व में आये। चटनी म्युज़िक एक तरफ बड़े आयोजनों के माध्यम से प्रस्तुत होता है तो दूसरी तरफ पिचकारी केवल होली–फगवा के अवसर पर गाने जानेवाला गीत प्रकार है।

चटनी म्यूज़िक

'चटनी' जैसा नाम है वैसे ही इस संगीत प्रकार के गुणधर्म है। यह एक मिश्रण युक्त संगीत है, जिसमे विभिन्न संस्कृति के, जैसे कि आफ्रिकी, अमरीकी, लेटिन अमरीकी और भोजपुरी–भारतीय संगीत का प्रभाव है। यह त्रिनिदाद टोबेगो, सूरीनाम, गयाना और जमैका में अधिक लोकप्रिय है। अब तेजी से अन्य देशों में भी लोकप्रिय हो रहा है। भारतीय मूल के लोगों ने अपने संघर्ष के समय १९४० के दशक में इसे जन्म दिया। शुरूआती दिनों में लग्न प्रसंग, मंदिर या खेतों में गाया जाने वाला यह प्रकार बड़े–बड़े शो के रूप में विशाल मैदानों में चमक–दमक और थोड़े बहुत शोर–छिछोरेपन के साथ प्रस्तुत होने लगा है। फूहड़, चंचल, साहित्य में अश्लीलता के साथ साथ प्रस्तुति के तरीके में गिरावट आई है। फिर भी इसकी लोकप्रियता असाधारण चोटी पर है। 'फुलौरी बिना चटनी कैसे बनी रामा कैसे बनी', 'दे लिव सिम्पल लाइफ और पीसे मसाला, टुडे इस माइक्रोवेव और नो मोअर चुल्हा' जैसे मजेदार शब्दों की रचना एक आम बात है।

चटनी म्यूज़िक ने १९८० के दशक में इतना व्यावसायिक रूप पाया कि १९८५ में छोटे से त्रिनिदाद देश में दस लाख अमरीकी डोलर्स कि आय हुई। भारत के संगीतकार जोड़ी 'कंचन– बाबला' में से कंचन को प्रसिद्ध 'जॉन्सन एंड जॉन्सन' कंपनी के साथ साइन करवाकर इसे प्रसिद्धि के शिखर पर ले गए।

कुछ कलाकारों ने नवीनता लाने के लिए चटनी के साथ कलिप्सो, सोका, अमरीकी ब्लूस इत्यादि मिश्रित कर इडियन सोका का भी स्वरूप दे दीया। आधुनिक चटनी गीत में करीबीअन भोजपुरी के साथ अंग्रेज़ी भाषा मिला कर उसे ढोलक में 'सोका' गीत के बीट के साथ मिलाया जाने लगा। चटनी कि सफलता के बाद १९९० के दशक में कई छोटी मोटी रिकर्ड कंपनियाँ चटनी म्यूज़िक कि रिकर्ड निकालकर अपना मुनाफा कमाने लगी। भोजपुरी, अंग्रेजी भाषाओं से मिश्रित गीतों में पहले केवल हारमोनियम, ढोलक और दंडताल (या धनताल) इत्यादि का उपयोग होता था पर अब सभी आधुनिक एलेक्ट्रानिक वाद्यों के साथ प्रस्तुति होती है। एक या दो गायकों की संगति के लिए देशी और इलेक्ट्रोनिक वाद्यों का शोर रहता है। चटनी म्यूज़िक अब छोटी बैठकों से बड़े स्टेडियम तक पहुंचा है। हजारो श्रोता इसका आनंद लेते है। "चटनी" क्रिओल लोगों के पोप्युलर संगीत का एक प्रकार से भारतीय प्रति उत्तर या जवाब है। शुरूआती दिनों में सीमित वाद्य और कलाकारों के साथ प्रस्तुत होनेवाले इस गीत प्रकार का स्वरुप अब सामूहिक संगीत के रूप में परिवर्तित हो गया है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

पिचकारी

हिन्दू प्रचार केंद्र के संस्थापक श्री रवि जी द्वारा स्थापित यह इंडो–त्रिनिदादी आधुनिक गीत प्रकार है। यह नामकरण "पिचकारी" (होली संबन्धित) से ही हुआ है। आफ्रिकन–क्रिओल संगीत प्रकार केलिप्सो इत्यादि के जवाब में 1990 के दशक में इसका आविष्कार हुआ ऐसा कहते है। होली–फगवा उत्सव के दौरान इस में सामाजिक व राजनीतिक स्थितियों पर कटाक्ष या टीका कर के इसे होली के गीतों की तरह गाया जाता है। सामाँजिक सन्देश से भरपूर नित नविन साहित्यिक रचना (भोजपुरी, हिन्दी एवं इंग्लिश मिश्रित) विशिष्ट धुनों में बांधकर युवा गायक प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेते है। विशेषतः होली–फगवा के दिनों इस कि पूरे त्रिनिदाद में हजारों लोगों कि उपस्थिति में स्पर्धा होती है, और स्पर्धा में सेंकड़ों लोग हिस्सा लेते है। "पिचकारी" स्पर्धा के समय स्थानिक टीवी और रेडियो पर कार्यक्रम का जीवंत प्रसारण भी होता है। आधुनिक इस गीत प्रकार में पारंपारिक लोकगीत का रंग तो है ही पर स्थानिक संगीत का प्रभाव भी है। कुछ रुढ़िवादी संगठनों, पंडितों और विशेष कर के सनातन धर्म महासभा ने इस गायकी को अहिंदू और अवैदिक कह कर विरोध किया। फिर भी 'पिचकारी' एक पर्व के सामान प्रतिष्ठा पा चुका है। वैश्वीकरण के दौरान जन्मा यह गायन प्रकार त्रिनिदाद में अत्यधिक प्रसिद्ध है।

बहुत ही साधारण साहित्य और संगीत की संपदा ले कर गए हुए भारतीयों ने अपनी सर्जनशीलता, रचनात्मकता, अभ्यासू वृत्ति, ऊर्जा के कारण नवनिर्मिति में नये आयाम स्थापित किये है। एक तरफ संगीत प्रकारों के मूल स्वरूप को सम्हाला है तो दूसरी तरफ चटनी, पिचकारी जैसे अन्यान्य संगीत प्रकारों को जन्म दिया है। भारत से हजारो किलोमीटर दूर इस देश में दशकों के बाद रिति–रिवाजों में परिवर्तन आना स्वाभाविक है, वैसे ही उसके गीत संगीत में बदलाव आया है। देशी धुन एवं वाद्यों की जगह उसके साथ स्थानिक भाषाओं से प्रभावित गीत, संगीत और अत्याधुनिक वाद्यों के मिश्रण से एक नया स्वरुप सामने आया है और प्रसिद्धि की चरम सीमा पर पहुचाया है। फिर भी भारतीयता की सुगंध निश्चित रूप से कायम है।

निष्कर्ष

- अपनी मेहनत, इमानदारी, कला संस्कृति और परम्परा के प्रति सम्मान के चलते त्रिनिदाद के भारतीय मूल के लोगो ने डेढ़ शताब्दी से अधिक समय तक अपनी परम्परा, रीति–रिवाज, कला–विशेष कर के संगीत को सम्हाल के रखा। भाषा, रहन सहन पर विदेशी प्रभाव पड़ने के बावजूद संगीत तथा अन्य कलाओं के अलावा अपने संस्कार, भाषा, साहित्य, संगीत वाद्य इत्यादि का भी जतन हुआ है।
- विज्ञान और तकनीकी आधुनिकीकरण के साथ संगीत में परिवर्तन अवश्य आया है पर उसमें बसी भारतीय आत्मा अभी भी जीवित है।
- भारत सरकार कि सहायता एवं अन्य धार्मिक–आध्यात्मिक संस्थाओं और उन के विचार के प्रचार प्रसार में वृद्धि आने के कारण तथा गत ५० वर्षों में आदान प्रदान के माध्यम बढ़ने के कारण अचानक भारत एवं भारतीयता का प्रभाव इन देशों कि मूल कलाओं के शुद्धि व परिष्करण में निश्चित रूप से पड़ा है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

- स्थानिक क्रियोल, पाश्चात्य और अन्य संस्कृतियो के प्रभाव तथा स्पर्धात्मक वातावरण के कारण भारतीय संगीत में नए रचना प्रकार (चटनी, पिचकारी) अस्तित्व में आये और पुराने प्रकारों में सकारात्मक परिवर्तन आया। इन्हें न केवल भारतीयों द्वारा परन्तु अन्य मूल के लोगों की लोक स्वीकृति मिली। काफी हद तक व्यापारीकरण भी हुआ। अमरीका, केनेडा, करीबियन, युरोपिय देशों में प्रचार हुआ। फलस्वरूप भारतीयता के नए स्वरुप को पहचान मिलने से भारतीय संगीत का प्रचार हुआ।

- भारतीय संगीत के प्रचार, समृद्धि, व्यापारीकरण के कारण नयी पीढ़ी शास्त्रीय संगीत सीखने की तरफ आकर्षित हुई। अनेक संस्थाएं, शालाएं, क्लासेस, कोलेज, यूनिवर्सिटी में भारतीय संगीत शिक्षण प्रारम्भ हुआ।

- कई संस्थाओं द्वारा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को भारत में शिक्षित कर वापस आने के बाद उनके द्वारा सांस्कृतिक संस्थाओं में संगीत, अन्य कलाएं और भारतीय संस्कृति का प्रचार होने लगा है।

- वैश्वीकरण से इन देशों के नागरिक अमरीका, केनेडा, इंग्लंड, नेदरलैंड, बेल्जियम, फ्रांस इत्यादि देशों में स्थानांतरीत हुए। इनके जरिये भारतीय संगीत एक विशेष रूप में वहाँ भी सुदूर पहुंचा है।

- संगीत क्षेत्र में अनुसंधान के नए आयाम स्थापित होने के लिए पर्याप्त नवनिर्मिति और बदलाव हुए है।

संदर्भ

Ribeira, I. (1992). The phenomenon of chutney sirlpng in TrinidJd and Tobago: the functional value of a social phenomenon', BA thesis , University of the West Indies, St Augustine.

Klass, Morton. (1961). East Indians in Trinidad: A study of cultural persistence. New York: Columbia University Press.

Sasenarine, Rudy, compiler (2009). "Chowtal Rang Bahar: A Treasury of Chowtal Songs from India and the Caribbean." Queens, New York: The Rajkumari Centre.

Manuel, Peter (2009). “Transnational Chowtal: Bhojpuri Folksong from North India to the Caribbean, Fiji, and Beyond.” Asian Music 40/2: 1A32

Manuel, Peter (2010). "Tassa Thunder: Folk Music from India to the Caribbean." Documentary video.

Manuel, Peter (2001). "IndoACaribbean Music". Garland Encyclopedia of World Music. New York and London: Garland Publishing. pp. 813–818.

Manuel, Peter.(2000). East Indian Music in the West Indies: TanASinging, Chutney, and the Making of IndoACaribbean Culture (Studies in Latin American and Caribbean Music Series). Philadelphia: Temple University Press.

Manuel, Peter. (1997/98). Music, identity, and images of India in the Indo A Caribbean diaspora.” Asian Music 29 (1):17A35

Manuel, Peter. (2000). East Indian Music in the West Indies: TanAsinging, Chutney, and the Making of IndoACaribbean Culture. Temple University Press.